अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान (वर्ष : 2025) दिनांक : 17.12.2025

समय सीमा : 3 घंटा द्वितीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खंड)–30

प्र. 1 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) दृष्टान्त द्वार के आधार पर जीव-अजीव व पुण्य-पाप को समझाएं।

(ख) भाव द्वार के आधार पर पारिणामिक भाव लिखें।

(ग) नौ तत्त्व द्वार लिखें।

(घ) कर्मद्वार (प्रथम) प्रारम्भ से लेकर वेदनीय के दो भेद तक लिखें।

प्र. 2 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) कर्मद्वार (द्वितीय) के आधार पर नाम कर्म बंध के कारण लिखें।

(ख) द्रव्य-गुण-पर्याय द्वार के आधार पर विशेष गुण समझाएं।

(ग) आत्म द्वार लिखें।

(घ) रूपी-अरूपी द्वार लिखें।

(ड़) विस्तार द्वार के आधार पर आश्रव व संवर समझाएं।

(च) हेय-ज्ञेय-उपादेय द्वार लिखें।

प्रतिक्रमण–20

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) कायोत्सर्ग संकल्प सूत्र व कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा लिखें।

(ख) क्षमायाचना सूत्र व जीव योनि लिखें।

(ग) सूत्र सहित ग्यारहवां व्रत व अतिचार लिखें।

(घ) पहले व तीसरे अणुव्रत के अतिचार लिखें।

प्र. 4 किन्हीं पांच प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) प्रतिक्रमण में कितने आवश्यक हैं? नाम लिखें।

(ख) दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक व सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में कितने-कितने समय का त्याग किया जाता है?

(ग) दर्शन-सम्यक्त्व का सूत्र लिखें।

(घ) 'कुक्कुझए' शब्द का क्या अर्थ है?

(ड़) प्रतिक्रमण में कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा कितनी बार बोली जाती है?

(च) कुल कितने अतिचार हैं? केवल संख्या लिखें।

(छ) दैवसिक व रात्रिक प्रतिक्रमण का कालमान लिखें।

कर्म प्रकृति–25

प्र. 5 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) दर्शनावरणीय कर्म बंध के हेतु लिखें।

(ख) वेदनीय कर्म भोगने के हेतु लिखें।

(ग) स्थावर दशक की अंतिम छह प्रकृतियों को समझाएं।

(घ) अंतरायकर्म भोगने के हेतु व गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें।

प्र. 6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

(क) मोहनीय कर्म की परिभाषा लिखते हुए नो कषाय को समझाएं।

(ख) कर्म की मुख्य अवस्थाएं बताते हुए बंध को समझाएं।

(ग) गोत्र कर्म की परिभाषा, उत्तर प्रकृतियां, बंध के हेतु, स्थिति तथा अबाधाकाल को समझाएं।

(घ) पिंड प्रकृतियों में शरीर बंध, शरीर संघात, आनुपूर्वी व विहायोगति नाम को समझाएं।

(ड़) दर्शन मोह की प्रकृतियों का कार्य एवं स्थिति लिखें।

(च) मोहनीय कर्म व आयुष्य कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें।

गीतिका (कर्मों की सज्झाय)–10

प्र. 7 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) बत्तीस.....छार रे।

(ख) आभा.....फन्द रे।

(ग) लक्ष्मण.....बीता रे।

(घ) सम्यक्त्व.....किसका रे।

प्र. 8 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें– 2

(क) कृष्ण कौन थे और वे कैसे मृत्यु को प्राप्त हुए?

(ख) सूर्य व चन्द्रमा पर कर्मों का प्रभाव कैसे पड़ता है?

(ग) कर्मों के कारण समुद्र में किसे फेंका गया?

(घ) गीतिका के अनुसार कौन से सबल कर्म के आगे निर्बल हो गए?

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–15

प्र. 9 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें (प्रत्येग वर्ग से एक-एक करें)– 15

पच्चीस बोल

(क) पन्द्रहवां बोल।

(ख) पच्चीसवां बोल।

पच्चीस बोल की चतुर्भंगी

(ग) चौथा बोल।

(घ) आठवां बोल।

पच्चीस बोल की चर्चा

(ड़) उन्नीसवां बोल।

(च) जीव के 8 भेद व 11 भेद किसमें व कौन से?

तत्त्व चर्चा

(छ) छह द्रव्यों में आज्ञा-अनाज्ञा लिखें।

(ज) अरिहंत भगवान की पृच्छा लिखें।

कोई एक पद्य लिखें–

(क) आश्रव.....चतुराई रे।

(ख) समकित.....लिगार।